बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनके व्यक्तित्व एवं अध्यापन निपुणता के संदर्भ में अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा के अन्तर्गत
शिक्षाशास्त्र विषय (शिक्षा संकाय) में
पीएच0डी0 हेतु उपस्थापित

शोध–प्रारूप

वर्ष–2023

31/01/24
Supervisor Name
Dr. MD EHSANUL HAQUE
Principal
M T T College
Basuara, Madhubani
Principal
Mithila Teacher's Training College
Basuara, Madhubani

Research Scholar's Name
SHAKILUR RAHMAN
Roll No. - O33

शोध–प्रारूप

शिक्षा शास्त्र विभाग (शिक्षा संकाय)

ल0ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

1. शीर्षक :

बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनके व्यक्तित्व एवं अध्यापन निपुणता के संदर्भ में अध्ययन

2. प्रस्तावना :

शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि अध्यापक शिक्षा के द्वारा सभी औपचारिक क्रियाओं तथा अनुभवों का ज्ञान प्रदान किया जाता है जो किसी व्यक्ति को अध्यापक के उस्तरादायित्वों को प्रभावशाली ढंग से निर्वाह करने में समर्थ बनाती है। अध्यापक शिक्षा में अध्ययन कर रहे प्रशिक्षुओं को बी.एड. प्रशिक्षुओं के नाम से जाना जाता है। किसी भी देश का भविष्य उस देश के अध्यापकों के हाथ में होता है क्योंकि किसी भी देश का भविष्य उस देश के बच्चे होते हैं और इन बच्चों को सही आकार देने का कार्य एक शिक्षक का ही होता है अगर यह शिक्षक सही ढंग से प्रशिक्षित होगा तभी देश के भावी भविष्य का निर्माण कर पाएगा। कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापको के स्तर से उपर नही उठ सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी यह कहा गया है कि किसी भी समाज की सांस्कृतिक व सामाजिक दृष्टि का पता उस समाज के अध्यापकों के स्तर से हो जाता है। ऐसा ही दृष्टिकोण रखते हुए कोठारी कमीशन ने कहा है कि देश का भविष्य कक्षा कक्ष में आकार ले रहा है। देश के इस भविष्य को आकार देने का कार्य शिक्षकों का है। यदि शिक्षक स्वयं सुशिक्षित या प्रशिक्षित है तो वह देश के भविष्य का सही आकार दे पायेगा। इस प्रकार देखे तो बच्चे देश का भविष्य हैं और इस भविष्य के निर्माता शिक्षक हैं। एक शिक्षक के जीवन में उसकी संवेगात्मक बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

इससे पहले बुद्धि लब्धि को ही सब कुछ माना जाता था। अब यह माना जाने लगा है कि एक अच्छी बुद्धि लब्धि वाला व्यक्ति अच्छी सफलता पा सकता है पर सबसे ऊपर पहुँचने के लिए भावात्मक समझ का होना भी जरूरी है। अच्छी भावात्मक समझ रखने वाला व्यक्ति कभी भी क्रोध और खुशी के अतिरेक में आकर अनुचित कदम नहीं उठाता है अर्थात् एक शिक्षक में भावनात्मक बुद्धि का होना विशेष महत्व रखता है क्योंकि कक्षा कक्ष में अनेक आवश्यकता वाले बच्चे होते हैं और उन बच्चों के संवेगों को समझना एक शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण चुनौती होती है। संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर भी पड़ता है। जिस शिक्षक की सवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है उसका व्यक्तित्व भी कहीं न कही उच्च पाया जाता है। एक शिक्षक का व्यक्तित्व शांत, गंभीर, अनुशासनप्रिय, मित्रवत, आत्मचिरवासी होना चाहिए। शिक्षक के व्यक्तित्व का सीधा प्रभाव विद्यार्थी के जीवन पर पडता है। एक शिक्षक के व्यवसायिक रूप से महत्वपूर्ण व्यक्तित्व लक्षणों को व्यक्तित्व के मानसिक और भावनात्मक वैचारिक पक्षों की विशेषताओं के रूप में समझा जाता है, जो शिक्षक की व्यावसायिक और शैक्षणिक गतिविधि कीं उत्पादकता को प्रभावित करते हैं और व्यक्तिगत शैली निर्धारित करते हैं।

एक अच्छे अध्यापक के लिए स्वयं को जानना, छात्रों को समझना और अध्यापन के विषयों को जानना जरूरी होता है। इस जानकारी से उसका अध्यापन प्रभावी बनता है। वर्तमान समय में व्यापक रूप से अध्यापकों में अध्यापन के प्रति उदासीनता देखने को मिल रही है। यहाँ तक कि विद्यालयों में उपस्थित होने पर भी निष्ठापूर्वक अध्यापन नहीं किया जाता। इससे शिक्षा की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। अध्यापकों की इस प्रकार की प्रवृत्ति का कारण जानने के लिए बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनके व्यक्तितत्व एवं अध्यापन निपुणता का अध्ययन करना आवश्यक जान पड़ता है। बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनके व्यक्तितत्व एवं अध्यापन निपुणता पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

आज हम अध्यापन को एक उद्यम का स्थान दे चुके हैं। ऐसी स्थिति में उद्यम सम्बन्धी दक्षता कुशलता एवं योग्यताओं को ग्रहण किए बिना कोई भी व्यक्ति, एक सफल अध्यापन–उद्यमी नहीं बन सकता। अध्यापन सम्बन्धी कौशल, प्रतिमान, तकनीकी विधि, सम्प्रेषण तकनीकी, अभिक्षमता अभिवृत्ति, उत्तरदायित्व आदि को अनुकूल ढंग से विकसित करने के लिए भी अध्यापक–शिक्षा को ग्रहण करना जरूरी हो जाता है। साथ ही जन्मजात शिक्षक के लिए भी विशेष प्रशिक्षण या शिक्षा उपयोगी ही साबित होगी। ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल और व्यवहार, जो प्रशिक्षण के चार मूलभूत आयाम है तथा दर्शन मनोविज्ञान एवम् शैक्षिक कलात्मकता, जो शिक्षा के आयाम हैं, सभी अध्यापक–शिक्षा में समाहित होने के कारण अध्यापन निपुणता की प्राप्ति हेतु अपरिहार्य बन चुके हैं।

आज वैज्ञानिक अनुसन्धान एवम् तकनीकी खोज के क्षेत्र में नित्य नवीन प्रगति होने के कारण ज्ञान का विस्तारण हो रहा है। जहाँ एक ओर कुशल एवं तकनीकी दक्षता प्राप्त शिक्षक की आवश्यकता महसूस की जा रही है, वही अधिगमकर्त्ताओं की संख्या में भी क्रमागत वृद्धि हो रही है और अध्यापक के सम्मुख नित्य नवीन, जटिल एवं विचित्र शिक्षण अधिगम परिस्थितियाँ उन्पन्न हो रहीं हैं। नवीन विषय क्षेत्रों में भी निरन्तर विस्तार होता जा रहा है। अतः शैक्षिक दृष्टि के अनुरूप अध्यापन निपुणता की प्राप्ति अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से ही सम्भव हो सकती है।

3. संबंधित साहित्य का अध्ययन :

एम. टोपाल (2013) ने शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके संगठनात्मक नागरिक व्यवहार से सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि

1. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर सामान्य है।
2. लिंग व जाति के आधार पर शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नही है।

3. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थीयों की संवेगात्मक बुद्धि व संगठनात्मक नागरिक व्यवहार में उच्च धनात्मक सम्बन्ध है अर्थात किसी व्यक्ति का संवेगात्मक बुद्धि का स्तर जितना उच्च होता है, वह संगठन में नागरिकोचित व्यवहार में उतना ही कुशल होता है।

एन. कश्यप एवं बी. श्रीवास्तव (2013) ने छात्राध्यापकों की संज्ञानात्मक बुद्धि तथा उनकी संवेगात्मक बुद्धि के मध्य संहसम्बन्ध में पाया कि

1. छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी संज्ञानात्मक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध है।
2. पुरूष वर्ग के छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उनकी संज्ञानात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बंध नही है जबकि महिला वर्ग के छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि व संज्ञानात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध है।
3. कला वर्ग व विज्ञान वर्ग, दोनों ही वर्ग के छात्राध्यापकों के संवेगात्मक बुद्धि व संज्ञानात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नही है।

टी. अग्रवाल (2015) ने अपने अध्ययन, भावी शिक्षकों की शिक्षण क्षमता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव में पाया कि

1. उच्च, औसत व निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले भावी शिक्षकों की शिक्षण क्षमता में सार्थक अन्तर है।
2. उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षको की शिक्षण क्षमता अधिक प्रभावपूर्ण है।
3. संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण क्षमता के बीच धनात्मक सार्थक सम्बन्ध है।
4. शिक्षण क्षमता को निर्धारित करने में संवेगात्मक बुद्धि उच्च भूमिका निभाती है।

प्रियदर्शनी गुप्ता (2013) ने ''बी0एड0 एवं एम0एड0 के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व समायोजन, संवेगात्मक परिपक्वता एवं मूल्यों का सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य किया और पाया कि

i. एम0एड0 के छात्र/छात्राओं का मध्यमान बी0एड0 के छात्र/छात्राओं से अधिक है। अतः एम0एड0 के छात्र/छात्राओं का समायोजन बी0एड0 के छात्र/छात्राओं से अधिक है। अतः उनके व्यक्तित्व समायोजन में सांख्यकीय दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ii. बी0एड0 एवं एम0एड0 के उच्च, मध्य एवं निम्न स्तरों की छात्राओं–छात्राओं, छात्रों– छात्रों और छात्राओं–छात्रों के मध्यमानों के अन्तर का टी0मान सांख्यकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् बी0एड0 व एम0एड0 के उच्च, मध्य निम्न स्तरों की छात्राओं व छात्रों के व्यक्तित्व समायोजन लगभग समान है।

iii. सभी स्तरों के छात्र/छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन, संवेगात्मक परिपक्वता और मूल्य लगभग समान है। उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

iv. आरक्षित वर्गों की छात्राओं व छात्रों के सभी समायोजन, परिपक्वता एवं मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया अर्थात् ये लगभग समान हैं क्योंकि इनके टी0मान में भी सामान्य वर्ग की छात्रायें और छात्रों के बराबर ही पाये गये। आरक्षित वर्ग के कुल विद्यार्थियों को छोड़कर अधिकांश विद्यार्थियों की पारिवारिक स्थिति आर्थिक स्तर पर कमजोर थी। इन सभी विद्यार्थियों को अन्य प्रकार की राज्य स्तरीय छात्रवृत्तियाँ भी प्राप्त हो रही थी।

सुनीता श्रीवास्तव (2015) ने ''भोपाल शहर के बी0एड0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत सेवाकालीन एवं पूर्व सेवाकालीन छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य किया और पाया कि

1. बी0एड0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत सेवाकालीन एवं पूर्व सेवाकालीन छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व एवं उनके पक्षों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

2. छात्रअध्यापकों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष अन्तर्मुखी–बर्हिमुखी स्वतन्त्र–परतन्त्र, प्रवृत्ति, स्वप्रत्यय, चिन्ता, समायोजन का स्तर पृथक–पृथक रूप से ज्ञात किया जा सकता है। शिक्षक प्रशिक्षण के लिये व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किया जा सकता है जिससे छात्र अध्यापक का पूर्ण प्रदर्शन अच्छा हो सके।

कविता वर्मा (2018) ने 'शिक्षकों के व्यावसायिक विकास एवं शिक्षण निपुणता का सहसंबंधात्मक अध्ययन' पर शोध कार्य किया और पाया कि

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण निपुणता आयाम योजना एवं प्रस्तुतीकरण में सार्थक सहसंबंध है।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण निपुणता आयाम मूल्यांकन एवं प्रबन्धन में सार्थक सहसंबंध है।

सुमन सिंह (2013) ने 'बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के प्रत्यक्षीकृत प्रतिबल स्तर, स्व–सम्मान तथा उनके शिक्षण निपुणता का अध्ययन' पर शोध कार्य जौनपुर, बलिया एवं वाराणसी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों पर किया और पाया कि

1. पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण निपुणता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण निपुणता पर प्रत्यक्षीकृत प्रतिबल स्तर तथा स्व–सम्मान का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

4. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व :

एक शिक्षक के लिए संवेगात्मक बुद्धि विशेष महत्व रखता है क्योकि अध्यापक शिक्षा के दौरान वी०एड0 प्रशिक्षु के लिए संवेगों पर नियत्रंण रखना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। आज बी0एड0 प्रशिक्षुओं में सांवेगिक अस्थिरता दिखायी पडती है जहाँ प्रशिक्षु बहुत जल्द निराश अथवा अति उत्साहित एवं अति उत्तेजित हो जाता है। सामान्य परिस्थितयों में वे धैर्य एवं साहस के साथ कार्य नहीं कर

पाते हैं जिस कारण उनका व्यक्तित्व व शिक्षण निपुणता, सांवेगिक अस्थिरता के कारण प्रभावित होती है। यदि किसी छात्र की संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है तो वह परिस्थितियों पर सरलता से नियत्रंण स्थापित कर समस्या का उचित निदान खोज लेता है। किन्तु यदि उसकी संवेगात्मक बुद्धि निम्न होती है तो वह बहुत जल्द निरूत्साहित हो जाता है। जिसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व एवं शिक्षण निपुणता पर पडता है। इस प्रकार बी०एड० प्रशिक्षु के लिए संबेगात्मक बुद्धि, व्यक्तित्व एवं शिक्षण निपुणता एक – दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुडे हैं। अतः इनका अन्तर्सम्बन्धात्मक व तुलनात्मक अध्ययन किया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

5. अध्ययन के उद्देश्य :

(i) बी०एड0 प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनके लिंग, जाति, निवास स्थान तथा अभिभावकों की शिक्षा एवं आय के आधार पर अध्ययन करना।

(ii) बी०एड0 प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व का उनके लिंग, जाति, निवास स्थान तथा अभिभावकों की शिक्षा एवं आय के आधार पर अध्ययन करना।

(iii) बी०एड0 प्रशिक्षुओं की अध्यापन निपुणता का उनके लिंग, जाति, निवास स्थान तथा अभिभावकों की शिक्षा एवं आय के आधार पर अध्ययन करना।

6. उपकल्पना :

(i) बी0एड० प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि में लिंग, जाति, निवास स्थान तथा अभिभावकों की शिक्षा एवं आय के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होता हैं।

(ii) बी०एड० प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व में उनके लिंग, जाति, निवास स्थान तथा अभिभावकों की शिक्षा एवं आय के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होता हैं।

(iii) बी0एड० प्रशिक्षुओं के अध्यापन निपुणता में उनके लिंग, जाति, निवास स्थान तथा अभिभावकों की शिक्षा एबं आय के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होता हैं।

7. शोध अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु विवरणात्मक एवं तुलनात्मक अनुसंधान प्ररचना का उपयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोध हेतु तथ्यों के संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वैतीयक स्त्रोत का उपयोग किया जायेगा। प्राथमिक एवं द्वैतीयक स्रोत से प्राप्त तथ्यों का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाएगा।

8. जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय के अन्तर्गत अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षु ही जनसंख्या माने जायेगे।

9. न्यादर्शन :

ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय के अन्तर्गत अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाले पाँच शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय से 500 प्रशिक्षु का चयन कर अध्ययन का संपादन किया जायेगा।

10. शोध–उपकरण :

प्रस्तुत शोध में मानकीकृत मनोवैज्ञानिक निम्न परीक्षणों का उपयोग किया जायेगा :

(क) संवेगात्मक बुद्धि मापनी– रोकिया जेनुद्दीन अैर अनजुंम अहमद

(ख) व्यक्तित्व मापनी – के0 एस0 मिश्रा

(ग) अध्यापन निपुणता – बी0 के0 पासी और एम0 एस0 ललिता

11. आंकड़े संग्रह विधि :

सर्वप्रथम चयनित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में जाकर वहाँ शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु से संक्षिप्त वर्ता कर अपने शोध संबंधित उपकरणों को प्रशासित किया जाएगा। इसके बाद इनकी प्रतिउत्तरित प्रतियों को एकत्र कर और इनसे संबंधित अन्य आवश्यक जानकारी विद्यालय के कार्यालय से अंकित करेगा।

12.सांख्यकीय विश्लेषण :

प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु प्रतिशत मान, मध्यमान, मानक विचलन, t–मान एवं सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया जायेगा।

13. समस्या कथन :

बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनके व्यक्तित्व एवं अध्यापन निपुणता के संदर्भ में अध्ययन

14. समस्या का परिभाषीकरण :

बी.एड. प्रशिक्षुओं : शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बी.एड. की शिक्षा प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों को बी.एड. प्रशिक्षु कहा जाता है।

संवेगात्मक बुद्धि : जब व्यक्ति द्वारा अपने जीवन एवं परिस्थितियों को अपने नियंत्रण में रखने का प्रयास किया जाता है तथा वह ममता, सुख–दुख, भय, क्रोध, मोह, ईर्ष्या आदि से प्रभावित नहीं होते, वही व्यक्ति संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान कहलाता है। वर्तमान शताब्दी में सामाजिक एवं शैक्षणिक प्ररिप्रेक्ष्य में बुद्धि की एक नई अवधारणा विकसित हुई है, जो पुराने परम्परागत सिद्धांत का स्थान ले रही है। इसे संवेगात्मक बुद्धि कहा गया है।

व्यक्तित्व : व्यक्तित्व एक विस्तृत प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत मनुष्य के आन्तरिक एवं बाहरी दोनों प्रकार के गुणों का समन्वय रहता है। इसके अतिरिक्त एक बात ध्यान देने योग्य यह है कि व्यक्तित्व कोई स्थायी प्रत्यय नहीं है। समय–समय पर व्यक्तित्व का स्वरूप बदलता रहता है। वास्तव में में व्यक्तित्व उस ढंग को कहते हैं, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अनुकूलन करता है।

अध्यापन निपुणता : अध्यापन निपुणता शिक्षक के उस व्यवहार की सफल अभिव्यक्ति है जिस व्यवहार को वह कक्षागत परिस्थितियों में अधिगमकर्ता में वांछित परिवर्तनों तथा शिक्षण के उद्देश्यों को पूर्ण करने में प्रयुक्त करता है ।

15. शोध अध्ययन का परिसीमन :

(i) प्रस्तुत अध्ययन हेतु ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा को सम्मलित किया जाएगा।

(ii) प्रस्तुत अध्ययन हेतु ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालय परिसर, सरकारी व स्ववित्तपोषित महाविद्यालय एबं निजी प्रशिक्षण संस्थानों को सम्मलित किया जाएगा।

(iii) अध्ययन हेतु केवल 500 बी०एड० प्रशिक्षुओं को सम्मलित किया जाएगा।

(iv) बी०एड० प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनके व्यक्तित्व एवं शिक्षण निपुणता के संदर्भ में ही तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

16. अध्यायीकरण :

प्रथम अध्याय	:	प्रस्तावना
द्वितीय अध्याय	:	संबंधित साहित्य का अध्ययन
तृतीय अध्याय	:	शोध प्रविधि
चतुर्थ अध्याय	:	आंकड़ों का विश्लेषण
पंचम् अध्याय	:	निष्कर्ष एवं सुझाव
		सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

17. संदर्भ–ग्रन्थ सूची :

1. टोपाल, एम0 (2013) शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके संगठनात्मक नागरिक व्यवहार से सम्बन्ध का अध्ययन, रिसेन्ट एजुकेशनल एण्ड साइकोलाजिकल रिसर्च, वोल्यूम–, वर्ष–2
2. कश्यप, एन0 एवं श्रीवास्तव, वी0 (2013) छात्राध्यापकों की संज्ञानात्मक बुद्धि तथा उनकी संवेगात्मक बुद्धि के मध्य संहसम्बन्ध का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष–20, अंक–3
3. अग्रवाल, टी0 (2015) भावी शिक्षकों की शिक्षण क्षमता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन, एशियन जनरल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी, वोल्यूम–5, इश्यू–2
4. गौड़, अश्वनी कुमार (2012); ''प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों का कक्षा–कक्ष समायोजन के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन'', प्राथमिक शिक्षक शैक्षिक संवाद की पत्रिका (NCERT) (ISSN No 970-9312) वर्ष–36, अंक–2, अप्रैल
5. पाल, श्याम सुन्दर (2015); ''ध्यान का किशोरों के व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभवों का अध्ययन'', 'अन्वेषिका' अध्यापक शिक्षा की शोध पत्रिका, नई दिल्लीः राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, खण्ड–10(2), मई
6. बास्करन, पी. पीटर (2017) इन्फ्लुएन्स ऑफ सॉफ्ट स्किल ऑन टीचिंग कम्पेटेंसी ऑफ हाईस्कूल टीचर्स, शिक्षा शोध प्रबन्ध, मनोमनियम सुन्दरम विश्वविद्यालय
7. सैनी, दीपक (2013) हरियाणा में शिक्षा कॉलेजों में विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण निपुणता को प्रभावित करने वाले घटकों का एक अध्ययन, शिक्षा शोध प्रबन्ध, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा